॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! आपसे सुन्दर कौन हो सकता है? आपसे उत्तम वैज्ञानिक कौन हो सकता है जिसने इस जगत् को रचाया, जिसने इतने बड़े ब्रह्माण्ड का सर्वत्र जीवन मानव शरीर को बना दिया। पिण्ड को ब्रह्माण्ड बना दिया। कैसी सुन्दर विवेचना है, कैसी सुन्दर रचना है आपकी। मैं तो इसको किसी काल में भी नहीं जान पाता। मैं तो यही नहीं जान पाता कि प्रभु! मेरे एक क्षण समय में कितनी तरङ्गें उत्पन्न होती हैं, श्रोत्रों में कितने शब्दों की उद्बाधता होती है, भगवन्! मैं तो ससार में कुछ नहीं जानता। मुझे तो भगवन्! एक ऐसा मार्ग दीजिए जिससे इस संसार में मेरे द्वारा विडम्बना न आ पाये क्योंकि संसार में नाना प्रकार की सुन्दरियों पर जब मेरी प्रवृत्तियाँ चलती हैं तो क्या वह सुन्दरियाँ मेरे लिए सुन्दर बन सकती हैं? किसी काल में सुन्दर बन सकती हैं। मेरे अन्तःकरण में यह संस्कार जमते चले जाएँगे। वह जो आपने चित्त नाम का क्षेत्र बनाया है क्या उसमें भगवन्! मैं यह बीज बोता ही रहूँगा? यह मैं नहीं बोना चाहता। मैं तो यह चाहता हूँ कि यह जो बीज अङ्कुर मेरे द्वारा उत्पन्न होते रहते हैं प्रभु! इसका स्त्रोत ही नष्ट हो जाए और यह स्त्रोत उस काल में नष्ट होगा जब प्रभु! मैं आपको सर्वस्त्र में दृष्टिपात करूँगा और मौन हो जाऊँगा कि संसार में कुछ है ही नहीं। प्रभु! मैं तो उस काल में उत्तम बन सकता हूँ, उससे द्वितीय मेरे लिए कोई मार्ग है ही नहीं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 578 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 653
वर्ष : 49 44 समग्र वर्ष : 55

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. भगवान् राम का अनुष्ठान	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-20
4. याग की प्रतिभा	पूज्यपाद-गुरुदेव	21-36
5. ऋषियों के उद्‌गार		37
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		38-42

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व शृङ्गी ऋषि जी) के शुभ आशीर्वाद से प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायाग का आयोजन लाक्षागृह बरनावा में श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय के प्रांगण में दिनाँक 14 मार्च, 2021 से 21 मार्च, 2021 तक बड़े हर्ष एवम् उल्लास के साथ आयोजित किया जा रहा है जिसमें आप सब अपने सम्बन्धियों व मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

आप सभी को होली-मिलन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

॥ ओ३म् ॥

भगवान् राम का अनुष्ठान

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं। और जितना भी उसका ये जड़-जगत अथवा चेतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गए हैं। वे अनन्तवान् हैं और वे विज्ञानवेत्ता हैं। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर करके वर्तमान के काल तक जितना भी ज्ञान और विज्ञान है वह प्रायः मानवीय मस्तिष्कों में सदैव नृत करता रहा है। परन्तु सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे सीमा में आने वाले नहीं हैं, वे सीमा से रहित हैं। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर प्रायः हम विवेचना करते रहे हैं। और ये विचार-विनिमय होता रहा है कि परमपिता परमात्मा का ये जो ज्ञान है ये अनूठा है और ये विचित्रत्त्व माना गया है। क्योंकि एक-एक परमाणुवाद के ऊपर मानव अपने में जीवन को हुत कर देता है और विचारता रहता है कि परमपिता परमात्मा का विज्ञान कितना अनन्तमयी है।

ऋषि-मुनियों का चिन्तन

मुझे बेटा! बहुत-सा काल स्मरण आता रहता है। जहाँ ऋषि-मुनि

अपनी स्थलियों में विद्यमान हो करके और भिन्न-भिन्न प्रकार की आभा में रत्त रहे हैं। कहीं मानव देखो, राष्ट्र के ऊपर विचारने लगता है। कोई मानव मानो विज्ञान की तरङ्गों के ऊपर मानो तरङ्गित होने लगता है और ये विचारने लगता है कि हमारा मानवीयत्त्व तरङ्गित, प्रायः उसके ऊपर विचार-विनिमय होना चाहिए। मुझे बेटा! वो काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में मुनिवरो! देखो, ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और अपने में विचार-विनिमय करते रहे हैं। एक यज्ञशाला के सम्बन्ध में बहुत कुछ चिन्तन किया जाता है। परन्तु एक-एक परमाणु के ऊपर जब अन्वेषण होता रहता है तो वह परमाणुवाद मानो इतना अनूठा है क्या एक परमाणु में बेटा! देखो ब्रह्माण्ड को दृष्टिपात करने लगता है। आज मैं बेटा! तुम्हें विज्ञान में ले जाना नहीं चाहता हूँ। आज का हमारा विचार, हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है। वेद मन्त्र तो बहुत-सी वार्त्ताएँ प्रगट कर रहा है। परन्तु केवल आज हम तुम्हें एक वाक्य उद्गीत रूप में गाना चाहते हैं जिसके ऊपर हमारे यहाँ ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके विचारते रहे हैं। मुझे स्मरण आता रहता है कि हमारे यहाँ बेटा! देखो, ऋषि-मुनि उस परमपिता परमात्मा के वेद मन्त्र के ऊपर अन्वेषण करते रहे हैं। और एक-एक वेद मन्त्र में बेटा! सर्वत्र ज्ञान और विज्ञान को दृष्टिपात करते रहे हैं।

याग

आओ, मुनिवरो! देखो, आज मैं तुम्हें उस क्षेत्र में न ले जाता हुआ केवल ये कि आज का हमारा वेद मन्त्र क्या कह रहा है। वेद मन्त्र कहता है **"यश्स्वत् प्रमाणम् ब्रव्हे क्रत्यम् ब्रव्हा, सम्भव लोकाः याज्ञाम् भवितम् ब्रह्मणेः यज्ञश्स्वतम् ब्रह्माः"।** बेटा! हमारे यहाँ याग के ऊपर बड़ा अन्वेषण होता रहा है और याग के ऊपर ऋषि-मुनियों ने बड़ा अनुसन्धान और अन्वेषण किया है। सृष्टि के प्रारम्भ में ही नाना ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और उन्होंने याग को बेटा! देखो, इस पृथ्वी की नाभि कहा है। जब आगे विचारने लगे तो इस याग को

मुनिवरो! देखो, इस ब्रह्माण्ड की नाभि कहा है। नाभि का अभिप्रायः यह केन्द्र है। अपने में केन्द्रित होता रहता है। जैसे माता के इस शरीर में एक नाभि है और नाभि से नाना प्रकार के रसों का रस्वादन होता रहता है। तो बेटा! वह माता नाभ्याम् बनी रहती है। इसी प्रकार इस संसार की, इस ब्रह्माण्ड की जो नाभि है वो याग कहा गया है। इससे पूर्व काल में हमने तुम्हें प्रगट कराते हुए कहा था **''यागाम् भवितम् ब्रह्मणाः लोकाम्।''**

भगवान् राम की अभिलाषा

आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ ऋषि और ऋषि-पत्नी अपने में विचार-विनिमय करते रहे हैं। मेरे पुत्रो! देखो, उन विचारों को ले करके हम अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं। मुझे स्मरण आ रहा है जब भगवान् राम बेटा! लङ्का को विजय करने के पश्चात् अपनी अयोध्या में विराजमान हुए तो महाराज भरत ने कहा, हे प्रभु! इस राष्ट्र को भोगिए। राम ने कहा कि मैं इस राष्ट्र को भोगने सुयोग्य नहीं हूँ और मैं अभी राष्ट्र का पालन नहीं कर सकूँगा। मेरे पुत्रो! देखो, दोनों वर्णस्तुतेः दोनों अपने में बड़े पूर्णता में गमन करते रहते थे। ऋषि-मुनियों की सभा एकत्रित हुई और उस सभा में मुनिवरो! देखो, भगवान् राम ने ये कहा, ऋषि-मुनियों के मध्य में, क्या मैं अयोध्या में राष्ट्र का भोगी जब बन सकता हूँ जबकि मैं बारह वर्ष का तप कर लूँगा, क्योंकि बारह वर्ष का तप बहुत अनिवार्य है। क्योंकि मैंने लङ्का को विजय किया है और उस विजय करने में मानो देखो, मुझे रजोगुण और तमोगुण छाया हुआ है। मेरे अन्तर्हृदय में रजोगुण छाया हुआ है, तमोगुण भी। यदि मैं तप नहीं करूँगा तो मुझे अभिमान की मात्रा बलवती हो जाएगी। और वह रजोगुण, तमोगुण मेरे अन्तर्हृदय में मानो छायमान हो जाएगा और मेरा जीवन अक्रिया देखो, निष्क्रिय बन जाएगा।

ऋषि-मुनियों से अनुमति

महात्मा वसिष्ठ मुनि महाराज उनके राजपुरोहित थे, और ब्रह्मवेत्ता भी थे। तपस्या के महत्त्व को भी जानते थे। मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने

ऋषि-मुनियों से कहा, कहो ऋषिवर! तुम सभी का क्या विचार है। क्योंकि राष्ट्रीय प्रणाली होकर रहती है और ये जो राष्ट्रीय प्रणाली का जो निर्वाचन होता है वो बुद्धिमानों के द्वारा और ब्रह्मवेत्ताओं के द्वारा होता रहा है। आप भगवन् निर्णय कराइए क्या करना है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि विश्वामित्र ने ये कहा, क्या मेरे विचार में तो ये है कि इनका जो वाक्य है वो यथार्थ है। तप करना चाहिए। महर्षि प्रह्लाण जी ने ये कहा कि राष्ट्र का पालन करना चाहिए। मेरे प्यारे! महात्मा वसिष्ठ ने कहा कि क्यों करना चाहिए। उन्होंने कहा, राष्ट्र अनाथ है और इसका पालन होना बहुत अनिवार्य है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, क्या राजा को तप नहीं करना चाहिए। प्रह्लाण जी ने कहा, करना चाहिए। तो जब तप नहीं होगा तो राष्ट्र कैसे चल पाएगा। उन्होंने कहा कि **"राष्ट्रम् ब्रह्मे क्रतम्"** वेद का वाक्य ये कहता है कि राष्ट्र को सञ्चालन करने के पश्चात् भी राजा अपने राष्ट्र का पालन करता हुआ भी मानो तपस्या में लीन रह सकता है। उन्होंने कहा, कदापि नहीं। जब तक अन्तःकरण में मानो देखो, मन की प्रवृत्ति और मन में इन्द्रियों की प्रवृत्ति जब तक समावेश नहीं हो जातीं तब तक मानव का तप मानो देखो, अधूरेपन में परणित रहता है। मुनिवरो! देखो, ये वाक्य जब महर्षि वसिष्ठ ने कहा तो महर्षि प्रह्लाण बेटा! मौन हो गए। तो उन्होंने कहा, प्रभु तप करने जाइए।

मेरे पुत्रो! देखो, महाराजा शिव से ये प्रश्न किया गया, क्या हे भगवन्! आप एक राजा हैं, आप निर्णय कराइए कि राम को क्या करना चाहिए। उन्होंने कहा, इन्हें तप करना चाहिए क्योंकि बिना तप के राष्ट्र ऊँचा नहीं बनता। प्रजा में महानता नहीं आ सकेगी। तो मेरे प्यारे! देखो, महात्मा भरत ने कहा, तो राष्ट्र का क्या बनेगा भगवन्! मैं भी ये चाहता हूँ कि तपस्या करने चला जाऊँ। महर्षि वसिष्ठ मुनि बोले कि हे भरत! तुम अपने राष्ट्र का पालन करो। तुम तो स्वतः तपस्वी हो और तुम्हारा वेद का जो वाक्य है कि इदन्नमम्, कि ये मेरा नहीं है। ये जो तुम्हारी भावना है यही तो तुम्हारा तप है। परन्तु तुम्हें स्वाभिमान ही है इसका और जब इदन्नमम् का तुमने पठन-पाठन किया है तो इसमें तुम अपने हुत में मानो देखो, स्थिर

रहो। महात्मा भरत ने वो वाक्य स्वीकार कर लिए। और राम को कहा, जाओ तुम वन में चले जाओ।

माता अरुन्धती और महात्मा वसिष्ठ मुनि का उपदेश

मेरे प्यारे! वह भयङ्कर वन को उन्होंने गमन किया। सीता देवी से कहा कि तुम गृह में तपस्वी बन करके रहो। क्योंकि तप करना बहुत अनिवार्य है। मेरे प्यारे! देखो, राम भयङ्कर वन में चले गए। और वनों में जा करके, उन्होंने गायत्री छन्दों को ले करके याग प्रारम्भ किया। और वो याग मानो देखो, आध्यात्मिक याग में परणित हो गए और परणित हो जाने के पश्चात् बेटा! देखो, माता अरुन्धती और वसिष्ठ मुनि महाराज, जब दोनों राम के समीप पहुँचे तो राम ने चरणों की वन्दना की और माता से कहा, हे माता! मुझे कोई उपदेश दीजिए, क्योंकि मैं तपस्या में परणित हूँ। तपस्या को मैं वास्तव में इतना नहीं जानता, जितना तुम्हारा उपदेश मेरे ही **''घोघाम् भव प्रव्हा वृत्ति देवत्वाम्''** जो मेरे में ही मानो समाहित हो जाए। मेरे प्यारे! देखो, माता अरुन्धती ने कहा, हे राम! मेरे विचार तो ये कहता रहता है क्या तुम इतने महान् तपस्वी हो कि तुम्हें ब्रह्मणेः ब्रह्म में तुम सदैव लीन रहते हो।

मेरे प्यारे! देखो, महात्मा वसिष्ठ मुनि महाराज ने अपनी देवी से कहा, हे देवी! मैं यह नहीं चाहता हूँ जो तुम उद्गीत गा रही हो। ये प्रसन्नता नहीं चाहते हैं। इसके हृदय की ऐसी विचित्र धारा, वो ये चाहते हैं कि मेरा जीवन महान् तपों में परणित हो करके मैं अपने राष्ट्र, समाज को उन्नत बनाता रहूँ। और ये मानो लोक-लोकान्तरों की यात्रा में, मैं सफल हो जाऊँ। उन्होंने कहा हे राम! **''अमृताम् दिव्यम् ब्रह्मः''** तुम अमृत का पान करते रहो और **अमृत कहते हैं नम्रता को।** जितना भी मानव के अन्तर्हृदय में नम्रता का वास हो जाता है और नम्रता में ज्ञान की प्रतिष्ठा हो जाती है उतना ही मानो देखो, मानव का अन्तःकरण पवित्र बनता चला जाता है। क्योंकि तुम्हें अपने अन्तःकरण को जानना है और अन्तःकरण को जो जान लेता है वही

महान् बन जाता है। महात्मा वसिष्ठ ने कहा, क्या तुम्हें, तुमने दृष्टिपात किया होगा अङ्गिरस गोत्र में एक ऋषि हुए हैं जिनका नाम वृत्तिका मुनि कहलाता था। और वृत्तिका मुनि ने ये विचार एक समय, वेदों का अध्ययन करते-करते क्या मैं अपने अन्तःकरण की वृत्तियों को जानना चाहता हूँ। और मैं अपने अन्तःकरण में ये जानना ये चाहता हूँ कि मेरे, मैं कितने जन्मों के संस्कार मेरे अन्तःकरण में विद्यमान हैं। क्योंकि **अन्तःकरण ही मानो चित्त कहलाता है** जैसे पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार के अङ्कुर विद्यमान होते हैं परन्तु वो बीज रूप में रहते हैं। जब देखो उनका समय आता है तभी उपज जाते हैं, उनके वह अङ्कुरित हो जाते हैं। इसी प्रकार मानव के अन्तःकरण में भी मानो ये चित्त नाम का स्थान है इसमें जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विद्यमान होते हैं। तो हे भगवन्! ब्रह्मणेः, हे राम! तुम उस अन्तःकरण को जागरूक बनाने का प्रयास करो।

अङ्गिरस गोत्र में जो **वृत्तिका मुनि** थे वह वृत्तिका अङ्गिरस कहलाते थे। परन्तु जब वे तपस्या करने लगे आचार्य से ये आज्ञा ली कि मैं मौन रहना चाहता हूँ और मौन रह करके आत्म-चिन्तन करना चाहता हूँ। गुरुदेव ने आज्ञा देई और वृत्तिका मुनि महाराज मौन हो गए और मौन हो करके उन्होंने वायु का सेवन किया। वायु का छः माह तक सेवन किया, छः माह तक जल का सेवन किया। वह तपस्या में परणित होकर मिथ्या नहीं उच्चारण किया। वह मौन रहते थे तो मुनिवरो! देखो, मुझे कुछ ऐसा स्मरण आ रहा है क्या उन्होंने मुनिवरो! देखो, पिचासी मानो देखो, पिचासी सम्भव् ब्रव्हे, आवृत्तियों में रत्त हो करके बेटा! पिचासी दिवस तक वह अपने में मानो देखो, निराहार बन गए। मेरे प्यारे! इसी प्रकार उन्होंने **बारह-बारह वर्ष के नौ अनुष्ठान** किए। और पिचासी वर्षों तक उन्होंने तपस्या की, कठोर तप किया। कहीं मानो देखो, जल को त्याग देते थे, कही प्राण सत्ता को अपने में धारण करके कुम्भक चक्र में प्रवेश हो जाते थे, कहीं मानो देखो प्राण के माध्यम से वो ऊर्ध्वा में गतिवान् हो जाते। मेरे प्यारे! देखो, वह ऋषि क्या महान् थे। परन्तु पिचासी वर्षों का इस प्रकार का तप करने के

पश्चात्, वह मुनिवरो! देखो, दो लाख वर्षों के जीवन को ही जान पाए। दो लाख वर्षों का जीवन, दो लाख जीवन उनके कैसे थे। वह अन्तःकरण में बेटा! बीज रूप में विद्यमान थे। परन्तु देखो उन्होंने साक्षात्कार दृष्टिपात करने लगे। मेरे प्यारे! देखो, कहीं वो तपस्वी थे तो कहीं साधारण प्राणी के रूप में विद्यमान थे। मेरे प्यारे! देखो, वृत्तिका मुनि ने पिचासी वर्षों तक तप करने के पश्चात् उन्होंने बेटा! देखो, अपने मानो देखो, उन्होंने दो लाख वर्षों के आवागमन के जीवन को जान पाएँ।

महर्षि वसिष्ठ मुनि महाराज ने कहा, राम! तुम्हें भी इस प्रकार का तप करना है और तपस्या में परणित रहना है। **तप किसे कहते हैं।** तप और अनुष्ठान मानो देखो, इसीलिए कि मानव के जीवन में एक शान्ति की स्थापना हो जाए। और जो हमारे रजोगुण, तमोगुण के द्वारा जो संस्कारों की उपलब्धि हुई है वह संस्कार मानो देखो, वह छिन्न-भिन्न हो जाएँ। ऐसा उद्बुद्ध करने के लिए तो मानव प्रयास करता रहता है। मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा, सम्भव ब्रहे, ऋषि ने कहा, वसिष्ठ ने हे राम! तुम भी इसी प्रकार अपने जीवन को तपोमय बनाओ। मेरे प्यारे! देखो, वह तपस्या में परणित हो गए।

याग के ऊपर चिन्तन

उन्होंने एक समय बेटा! देखो, महर्षि वसिष्ठ और माता अरुन्धती और राम और वृत्ति, मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि ये विद्यमान हो करके, राम के समीप बेटा! देखो, याग के ऊपर चिन्तन करने लगे। राम ने ये कहा वसिष्ठ से कि तुम याग को जानते हो। उन्होंने कहा, मैं कुछ-कुछ जानता हूँ। मानो याग का इतना विशाल ब्रह्माण्ड है क्या इसको में पूर्णरूपेण नहीं जान पाता। जब मानो देखो, राम ने कहा कि भगवन्! आप क्यों नहीं जान पाते। उन्होंने कहा, ये भयङ्कर वन है और वन में जाने के पश्चात् प्रत्येक वस्तु को नहीं जान सकता। इतना प्रभु का ये संसार रूपी जो याग चल रहा है यह ऐसा विशिष्ट याग है कि इसके ऊपर मैं, देखो अनुसन्धान

करता रहूँ तो मैं, वेद का मन्त्र कहता है, सहस्त्रों वर्षों की आयु भी सूक्ष्म बन जाएँ। मेरे पुत्रो! देखो, जब ये वाक्य उन्होंने कहा तो वे शान्त हो गए। मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने कहा कि याग अपने में बड़ा प्रियतम् कहलाता है। यजमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है और वो मानो देखो तरङ्गों में तरङ्गित होना चाहता है। वो अग्नि और वेद मन्त्र के द्वारा, मेरे प्यारे! देखो, अग्नि की धाराओं पर वो द्यौ में प्रवेश करना चाहता है। क्योंकि द्यौ में किसलिए प्रवेश करना चाहता है व द्यौ में ही तो शब्द की स्थिति हो जाती है और द्यौ में जहाँ देखो शब्द की स्थिति हुई और शब्द मानो देखो आकार, अङ्कुरित होता हुआ, आकारों के अङ्कुरों को ले करके वह द्यौ में प्रवेश करता रहता है। जितना भी परमात्मा का ब्रह्माण्ड है और ब्रह्माण्ड में जो याग हो रहा है उस याग को वो साक्षात्कार करने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं इस सम्बन्ध में, ये बड़ा विशाल विज्ञान में, मैं तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल ये कि मुनिवरो! देखो, राम के आश्रम में, भयङ्कर वनों में बेटा! देखो, ऋषि-मुनि आते रहते, चर्चाएँ होती रहतीं और वह मानो देखो तपोमयी चर्चा करते रहते।

महर्षि भारद्वाज मुनि द्वारा प्रभु की महिमा का वर्णन

मेरे पुत्रो! देखो, स्मरण आता रहता है। एक समय बेटा! महर्षि भारद्वाज मुनि के सहित कुछ ब्रह्मचारी थे, वे भ्रमण करते हुए और ब्रह्मचारिणी शबरी भी विद्यमान थी। जब राम तप करने जा रहे थे **"तपोमयी निष्ठः सम्भेव ब्रह्मणाम् ब्रह्मेः क्रतम्।"** बेटा! ये सब उनके समीप पहुँचे, भारद्वाज मुनि के चरणों की वन्दना की और भारद्वाज मुनि के चरणों की वन्दना करते हुए कहा, कहो भगवन्! आज मैं अमृतम् ब्रहे। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि वे दर्शनार्थ मानो देखो, तुम्हारे समीप आया हूँ और मैं चाहता हूँ कि देखो अपनी कुछ वार्त्ता प्रगट करो।

राम ने कहा प्रभु! आइए, विराजिए। ब्रह्मचारिणी शबरी के चरणों की वन्दना की और ये कहा कि यह वही ब्रह्मचारिणी शबरी हैं जिन्होंने मुझे राष्ट्र

का, देखो संग्राममू ब्रव्हे, जिन्होंने मुझे अस्त्रों-शास्त्रों की सर्वत्रता का प्रदान किया था। मेरे प्यारे! देखो, विराजमान हो गए, चर्चा होने लगी विज्ञान की, परमात्मा के जगत की चर्चा होने लगी। ब्रह्म की चर्चाएँ होने लगीं कि ये ब्रह्म क्या है। तो राम से ये कहा, भारद्वाज मुनि ने क्या राम एक ऐसा अनूठा मानो देखो विचित्रत्त्व है जो सर्वत्र मालाओं को अपने में धारण किए रहता है। सर्वत्र ब्रह्माण्ड की एक माला है जिस माला को वो अपने में धारण कर रहा है, वो मालामयी कहला रहा है। मानो वह नाना प्रकार के लोक-लोकान्तरों की माला अपने में धारण कर रहा है। मेरे पुत्रो! देखो, जब ये कहा गया **"सम्भवम् ब्रह्मणेः लोकाम् वृत्तिस्तुताः"। ये माला ही तो बेटा! देखो, सर्वत्र ब्रह्माण्ड कहलाता है।** जब ऋषि-मुनि बेटा! विज्ञान के ऊपर अन्वेषण करना प्रारम्भ करते हैं तो एक-एक शब्द में बेटा! ब्रह्माण्ड की एक अनुपम रचना हो रही है, जिसको माता अपने में विचारती रहती है।

मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें गम्भीरता में नहीं ले जा रहा हूँ। विचार केवल ये प्रगट कर रहा हूँ कि परमात्मा का ये अनूठा जगत है। भारद्वाज मुनि ने कहा है कि मैं अपनी विज्ञानशाला में विचारता रहता हूँ उन अङ्कुरों को, अङ्कुरों को अङ्कुरित करता हुआ, उनका विभाजन करता रहता हूँ। तो एक ब्रह्माण्ड में ही नाना ब्रह्माण्डों का मुझे दर्शन होता रहता है। मेरे प्यारे! राम बड़े प्रसन्न हुए। राम ने कहा, धन्य है ऋषिवर! आप मुझे प्रभु की महिमा का वर्णन करा रहे हो जिससे मेरा अन्तःकरण पवित्र बन जाएगा। और मेरे अन्तःकरण में जो रजोगुण, तमोगुण छा गया है वो समाप्त हो जाएगा। तो मेरे प्यारे! देखो वह राम के समीप नाना ऋषि-मुनियों का आवागमन होता रहता।

ऋषि और ऋषि-पत्नी का विचार-विनिमय

मेरे प्यारे! देखो, मैं जो तुम्हें उच्चारण करना चाहता था बेटा! एक समय माता अरुन्धती और वसिष्ठ मुनि महाराज अपने आश्रम में विद्यमान थे। और वो उच्चारण करने लगीं कि हे प्रभु! हे देव! मैं यह जानना चाहती

हूँ कि भगवन्! क्या ये ब्रह्माण्ड क्या है। जिस ब्रह्माण्ड के मानो देखो निचरले भाग में सब हम विद्यमान हैं और राम के हृदय में भी इस प्रकार की तप करने की जिज्ञासा जागरूक हुई है। हे प्रभु! ये क्या है। तो महर्षि वसिष्ठ मुनि बोले कि हे देवी! ये माला का स्त्रोत कहलाता है। जैसे एक माला, माला-माला में पिरोयी जाती है। जैसे एक वेद का मन्त्र है और वेद मन्त्र को वो उद्गीत रूप में गा रहा है और वेद मन्त्रों का उद्गीत गाता हुआ, एक-दूसरे में माला पिरोयी जाती है। मानो देखो, शब्दों की माला बन रही है। अक्षरों की माला बन रही है और माला को मानो देखो व्याकरण से सजातीय बना दिया है और व्याकरण को मानव के मस्तिष्क से सजातीय बनाया है। और मस्तिष्क के आन्तरिक जगत में जो स्वरों की ध्वनियाँ हो रही हैं इसको **अनाहद** कहते हैं वह उसमें पिरोया हुआ है, वह शब्दों में शब्दों की रचना हो रही है। मेरे प्यारे! देखो, ये कितना विचित्रत्त्व कहलाता है। जब मानव ही अपने में विचारने लगता है कि मैं परमात्मा के राष्ट्र में विद्यमान हूँ। तो मुनिवरो! देखो, भारद्वाज मुनि महाराज कहते हैं, क्या हे प्रभु! ये जो परमात्मा का जगत है, ये अनूठा है। माता अरुन्धती से वसिष्ठ मुनि कहते हैं, क्या देखो, भारद्वाज भी यही कहते हैं और हम भी यही उच्चारण कर रहे हैं। क्या **ब्रह्मवेत्ता** कौन कहलाता है। मेरे प्यारे! माता अरुन्धती ने जब ये कहा कि ब्रह्मवेत्ता कौन है और आपको ब्रह्मवेत्ता क्यों कहते हैं। तो वसिष्ठ मुनि महाराज ने कहा, हे देवी! जो संसार में लिपायमान नहीं होता है वह देखो, ब्रह्म के आङ्गन में रत्त हो जाता है। और जो मानो लिपायमान न हो करके और वह परमात्मा के जगत में ही स्थित हो जाता है वह ब्रह्मवेत्ता कहलाता है। जो मानो देखो अपने में आत्मतत्त्व में गमन कर रहा है। उसी की प्रेरणा के आधार पर जो मानव क्रियाकलापों में परणित रहता है वही ब्रह्मवेत्ता कहलाता है। और उन क्रियाओं में भी जो मानो सूक्ष्मतम परमात्मा का ब्रह्माण्ड निहित रहता है वही मानो ब्रह्मवेत्ता है। तो महर्षि वसिष्ठ मुनि महाराज ने अपनी देवी से जब ये कहा तो **"दिव्यम् भवा ब्रह्मणेः दिव्याम् देवत्वाम् ब्रह्मेः क्रत्व देवताः"**। तो मुनिवरो! देखो,

महर्षि वसिष्ठ मुनि ने कहा, हे देवी! ये जो ब्रह्माण्ड है, इसको जो अङ्गों-उपाङ्गों से जानने वाला है वो ब्रह्मवेत्ता है और वो मानो देखो विज्ञानवेत्ता कहलाता है। और जो ब्रह्मविद्या को, ब्रह्म विज्ञान को और व भौतिक विज्ञान को दोनों को एक सूत्र में ला करके मन के रूप में निश्चित कर लेता है, मानो देखो, वह ब्रह्मवेत्ता कहलाता है।

मेरे प्यारे! माता अरुन्धती ने कहा, प्रभु! ये वसिष्ठ मण्डल है और ये अरुन्धती मण्डल है। इन मण्डलों पर परस्पर वायुमण्डल में देखो क्या समन्वय रहता है। माता अरुन्धती ने जब ये कहा तो वसिष्ठ मुनि महाराज ने ये कहा, क्या हे देवी! ये जो अरुन्धती मण्डल है और वसिष्ठ है, इन दोनों की जब माला बनती है और माता के गर्भस्थल में जब हम जैसे शिशु होते हैं तो दोनों की **सप्तमाह** जब हो जाता है तो उस समय उसकी छाया आती है। और दोनों मण्डलों का एक सूत्र बन करके इसकी जब छाया आती है तो देखो बुद्धि का निर्माण होता है। माता के गर्भस्थल में ही मानो छाया आ रही है और निर्माणवेत्ता निर्माण कर रहा है। परन्तु देखो मेधावी और प्रज्ञावी बुद्धि का निर्माण होता है। मेरे प्यारे! देखो, माता अरुन्धती ने कहा, हे प्रभु! यदि इनकी छाया न आए तो प्रज्ञा बुद्धि नहीं बन पाएगी। माता अरुन्धती ने जब ऐसा कहा तो वसिष्ठ बोले, क्या देखो, प्रज्ञा बुद्धि तो निर्माणित हो सकती है परन्तु देखो, वह जो उनकी छाया है वो भी इसी क्रियाकलाप को करती रहती है। वह भी मानो देखो इसी प्रकार की विज्ञान की तरङ्गों को दे करके तरङ्गित करती रहती है यह निश्चित नहीं है परन्तु देखो, यह सहयोगी बन जाती है।

उन्होंने कहा, प्रभु! ये भी मैंने जान लिया परन्तु मैं यह जानना चाहती हूँ कि चन्द्रमा और सूर्य का परस्पर क्या समन्वय रहता है। उन्होंने कहा, क्या ये परस्पर यह समन्वय रहता है क्योंकि चन्द्रमा अमृत देता है और सूर्य ऊर्ज्जावादी है उस ऊर्ज्जा को वो अमृत बना करके मुनिवरो! देखो इस संसार में परणित कर देता है। मेरे प्यारे! वह प्रभु का विज्ञान कितना अनूठा है।

वसिष्ठ मुनि ने कहा है कि प्रभु का विज्ञान कितना अनूठा है। क्या वो ही चन्द्रमा है और वो ही ऊर्ज्जा ले करके मानो सूर्य से और वो उसको अमृत बना देता है। और उसे ऊर्ज्जा में परणित कर देता है। मेरे प्यारे! वही तो चन्द्रमा है सोम देने वाला है और वह सौम्य कहलाता है। मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेषता में नहीं जाना चाहता। विचार केवल ये है कि माता अरुन्धती और वसिष्ठ दोनों की विचारधारा।

हमारा उच्चारण करने का अभिप्रायः ये है कि जो अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहता है तो मुनिवरो! पति और पत्नी दोनों जब परस्पर ब्रह्मज्ञान की चर्चा करने लगते हैं तो बेटा! गृह स्वर्ग बन जाता है। क्योंकि बाल्य-बालिका उन्हीं के विचारों को श्रवण करके वो भी उसी प्रकार की आभा में रत्त हो जाते हैं। माता अरुन्धती ने यही तो कहा है, क्या दोनों परस्पर यह चर्चा करें। पति और पत्नी यदि गृह को स्वर्ग बनाना चाहते हैं और स्वर्ग को दृष्टिपात करना चाहते हैं तो बाल्य-बालिका भी उसी प्रकार के विचारों को ले करके जब रमण करते हैं। तो मानो देखो गृह का, गृह पवित्र बन जाता है। गृह में महानता आ जाती है।

अमृत की विवेचना

विचार आता रहता है बेटा! आज मैं तुम्हें विशेषता में तो नहीं ले जा रहा हूँ। तो विचार केवल यह कि देखो हमारे यहाँ दर्शनों का अभ्यस्थ होना चाहिए और देखो ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएँ होनी चाहिए जिससे गृह पवित्र बन जाए। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है देवी! **''अमृताम् ब्रह्मणेः देवत्वाम्''** तुम अमृत को ग्रहण करने वाली बनो। मेरे प्यारे! देखो, अमृत के ऊपर, उनकी विचारधारा प्रारम्भ होती रहती। अमृत क्या है? उन्होंने कहा, अमृत उसे कहते हैं जो अन्तरात्मा के विचारों को ले करके और मानो अपने में क्रियाकलाप प्रारम्भ कर देता है और उस अमृत को ग्रहण करने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, ये वाक्य ऋषि ने जब वर्णन किया माता अरुन्धती मौन हो गयी। उन्होंने कहा, देवी! तुम्हें ये प्रतीत होना

चाहिए परमात्मा का ये एक दूसरा जो जगत दृष्टिपात आता है। मानो देखो, एक दूसरा अमृत दे रहा है। जब मैं विचारता रहता हूँ कि चन्द्रमा देखो, ये बुद्ध मण्डल को अमृत देता है, ये उसमें पिरोया रहता है। और वह बुद्ध मण्डल मुनिवरो! देखो, वह शुक्र में पिरोया हुआ है, वह उसको अमृत देता रहता है। इसी प्रकार लोक-लोकान्तरों की माला बन जाती है और वह माला बन करके मुनिवरो! देखो, एक आकाशगङ्गा के रूप में दृष्टिपात आती है। बेटा! मैं विज्ञान में जाना नहीं चाहता हूँ। केवल तुम्हें ये परिचय देना चाहता हूँ क्या ऋषि-मुनि अपने में कितनी महान् विचारधारा अपने में प्रगट करते रहे हैं। वे अपने मानवीयत्त्व की चर्चा करते रहे।

मेरे प्यारे! देखो, ये विचार-विनिमय करके भगवान् राम ने बारह वर्ष का तप किया और बारह वर्षों तक वो दर्शनों को चिन्तन में लाते रहे। अन्तःकरण जब उनका पवित्रतम बन गया और तपस्या में मुनिवरों! परणित हो गए। तपस्या करते हुए अपने में देखो, इन्द्रियों को मन में समावेश करना और मन को प्राण में समावेश करना और प्राण और मन मिल करके मुनिवरो! देखो, एक चिन्तन होता है जिसको हमारे यहाँ अमृत कहते हैं। वही तो ऋषि-मुनियों का अमृत है बेटा! मेरे प्यारे! देखो, अमृत की विवेचना देते हुए ऋषियों ने बहुत ऊँची वार्त्ता कही। एक वेद मन्त्र का उद्गीत गाया। उन्होंने कहा, **''ब्रह्मणम् ब्रहे क्रतम् रन्धस्सुतम् ब्रहे व्रतम् देवत्वाम् देवस्तुति वर्णस्तुति क्रतम देवाः''।** वेद के आचार्य ने बेटा! इस वाक्य को ले करके और ये कहा कि **''ब्रह्मणम् ब्रह्मेः ब्रह्मणमृते''** जब मानव साधना में परणित होता है, जब तपस्या में परणित होता है मन और प्राण और देखो ये इन्द्रियाँ हैं–ये प्राण और मन, ये सर्वत्र जब एक सूत्र में हो करके, मुनिवरो! ये मानो देखो, त्रिवेणी के स्थान पर जब प्राणों का एक समूह बन करके जब ये देखो ब्रह्मरन्ध्र के स्थान पर ये मानो उससे ऊर्ध्वागति में स्थित देखो, दो नाड़ियाँ होती हैं। उन नाड़ियों का वृत्त होता है, दोनों कृतिका बन करके अपने में गमन करने का समन्वय, बेटा! ब्रह्मरन्ध से होता है और ब्रह्मरन्ध्र से ही मुनिवरो! देखो, यौगिकता में वो अपने में

धारण करके अपने में अमृत को ग्रहण करते हुए वह अमृतमयी बन जाती है। मेरे प्यारे! देखो, विचार आता रहता है वो अमृतः, ऋषि-मुनि जब साधना में परणित करते हैं तो वो देवत्त्व बन जाते हैं और देवता बन करके मुनिवरो! इस सागर से पार हो जाते हैं।

आओ, मेरे प्यारे! मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। मैं इनमें गम्भीरता में चला गया हूँ बेटा! साधना के क्षेत्र में। परन्तु विचार ये कि भगवान् राम ने अपने में साधनाएँ की हैं और साधना करते हुए मुनिवरो! बारह वर्ष तक उन्होंने अनुष्ठान किया। और वे मिथ्या नहीं उच्चारण करते थे सदैव वो अमृत का पान करते रहे बेटा! भयङ्कर वनों में, प्रभु की आराधना करते हुए व तपोमय जब वन में उनका जीवन तपोमय बन गया।

भगवान् का राज्याभिषेक

तप करने के पश्चात् मुनिवरो! देखो महात्मा वसिष्ठ मुनि महाराज, माता अरुन्धती जब उनके द्वार पर, उन्होंने कहा प्रभु! अब तुम्हारा तप पूर्ण हो गया है। मेरे प्यारे! राम ने कहा प्रभु! ये जो मैंने तप किया है, साधना की है। आपने मुझे जो नृत कराया है प्रभु! मेरी तो राष्ट्रीय इच्छा ही नहीं रही है। मुनिवरो! वसिष्ठ बोले कि हे राम! ये तो तुम्हें राष्ट्र को तो जरूर ही उन्नत बनाना है। क्योंकि **राष्ट्र बिना तपस्वियों के नहीं गति करता है।** यदि राजा तपस्वी नहीं होता है तो राजा के राष्ट्र में तो रक्तभरी क्रान्ति का सञ्चार होता ही रहेगा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने ये कहा, वसिष्ठ जी ने, क्या हे राम! तुम्हें राष्ट्र का पालन करना बहुत अनिवार्य है। क्योंकि देखो, यदि राष्ट्र में तपस्वी नहीं होते हैं, राजा तपस्वी नहीं होता है, तपस्वियों के द्वारा उसका निर्वाचन नहीं होता है तो एक समय देखो राष्ट्र एक रक्तभरी क्रान्ति बन करके मानव-मानव को नष्ट करने लगता है।

मेरे प्यारे! देखो, वसिष्ठ ने जब ये कहा, राम ने उस राष्ट्र को स्वीकार कर लिया और राम ने स्वीकार करने के पूर्व ये कहा कि मेरे जो प्रिय भरत

है, वो महान् हैं। मानो वो महान् तपस्वी हैं। वसिष्ठ ने कहा कि वो तपस्वी हैं परन्तु उनका तप अपने स्थान पर है, तुम्हारा तप अपने स्थान पर है। मेरे प्यारे! देखो, वह वसिष्ठ और माता अरुन्धती और राम मेरे प्यारे! अयोध्या में पधारे। और राम को देखो, एक दिवस कर दिया है कि अब राम को राजस्थली पर विद्यमान किया जाएगा। मेरे प्यारे! देखो, उसमें निर्वाचन में महर्षि विश्वामित्र और महर्षि वसिष्ठ और ब्रह्मचारी सुकेताम् सुक्त ऋषि महाराज और मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज और कवन्धि, ये सर्वत्र आ करके बेटा! राम को राजस्थली पर नियुक्त किया गया। अनन्य ऋषि मुनि और राजा भी थे। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, प्रभु! आप अब निरभिमानता से प्रजा को सुखद और आनन्द की अनुभूति दीजिए। मेरे प्यारे! देखो, राम ने अपने में वो ही क्रियाकलाप करने लगे बेटा! तपस्या में, **"अमृताम् भूतम् ब्रह्माः"।** हमारे यहाँ राष्ट्र प्रणाली बड़ी विचित्र मानी गयी है। तो वेद के आचार्यों ने बेटा! देखो, नियुक्त की और वह तपस्या में परणित हो तपस्या से निवृत्त हो करके वह राष्ट्र की तपस्या करने लगे। मेरे प्यारे! देखो, वह अपने में अपनेपन को ही ध्यानावस्थित करते रहे, विचारते रहे और भरत को अपना सहयोगी बनाया।

माता सीता को प्रेरणा

मेरे प्यारे! देखो, सीता से कहा, देवी! **"सन्तानाम् भूतम् ब्रह्मेः क्रतम्"** तुम्हें सन्तान को उपार्जन करना है। परन्तु उसको सुयोग्य बनाना हमारे राष्ट्रीय प्रणाली में ये नियमावली रही है उस काल में, क्या रघुवंश में, क्या ये महाराजा सगर से ले करके ये प्रणाली चली आ रही है। क्या देखो, माताओं के ये कर्त्तव्य हैं, क्या जन्म देना, उन्हें ब्रह्मविद्या देना और ब्रह्मविद्या के पश्चात् माता ही उन्हें अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या प्रदान करती रही हैं। मेरे प्यारे! देखो, एक पुत्र ही था। देखो एक पुत्र को ले करके, द्वितीय पुत्र अधृती हो गया। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अस्त्रों-शस्त्रों की विद्या महर्षि बाल्मीकि आश्रम में उस विद्या को प्रदान किया।

आज मैं बेटा! इस सम्बन्ध में विशेष तुम्हें चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार केवल ये कि मुनिवरो! देखो, राष्ट्रीय प्रणाली बड़ी विचित्रता में गमन करती रही है। ये तपस्या करना और विज्ञान को अपने में धारण करना और दोनों प्रकार के विज्ञान को जान करके उसका एक-दूसरे में समावेश करने का नाम मुनिवरो! देखो, ''विज्ञानात्तम् ब्रह्मेः' उसे विज्ञान कहते हैं।

ये है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते गाते हुए इस सागर से पार हो जाएँ। क्योंकि परमात्मा का जगत बड़ा अनूठा है और वह ज्ञान और विज्ञान मानो देखो उसी की प्रतिभा कहलाती है। ये संसार उसी का ज्ञान और विज्ञान में समन्वय हुआ एक अनुपम जगत है जिसके ऊपर हमें विचार विनिमय करना है। ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा।

आज के उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि महान् को तपस्वी बनना चाहिए। मानव को तप में रहना चाहिए और अपने में अपनेपन को ही विचारते हुए मुनिवरो! देखो उद्गीत गाना चाहिए। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

''ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनाः वायाः''
''ओ३म् यश्शचाहम् गायन्तवा रेवम् आपाः''
''ओ३म् सर्वम् भद्राः''

महर्षि महानन्द मुनि जी–अच्छा भगवन्।
पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्दित रहो।

दिनाँक : 5 अप्रैल, 1990
स्थान : ग्राम भटौला, बुलन्दशहर
उत्तर प्रदेश

॥ ओ३म् ॥

याग की प्रतिभा

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं। और उसका जो ज्ञान और विज्ञान है वो भी अनन्तमयी माना गया है। और जितना भी ये जड़-जगत, चेतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही अन्वेषण करता चला आया है। और उस परमपिता परमात्मा के इस अनूठे जगत के ऊपर वह अपनी विचारधारा को व्यक्त करता रहा है, और मनन करता रहा है कि वह ब्रह्माण्ड क्या है और परमपिता परमात्मा का ये अनूठा जगत कैसा अनुपम है। तो हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने अपनी-अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके इस ब्रह्माण्ड को उन्होंने मापने का प्रयास किया। और ये दोनों प्रकार के विज्ञान को जानने के लिए तत्पर रहे। क्योंकि हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों के मस्तिष्कों में मानो उस ब्रह्माण्ड को दो प्रकार से उन्होंने मापने का प्रयास किया। एक आध्यात्मिक विज्ञान के द्वारा और द्वितीय भौतिक विज्ञानों के द्वारा। क्योंकि ये दोनों का जगत एक अद्वितीय कहलाता है। क्योंकि प्रत्येक मानव अपने में मानवीयता और अपने में अपनेपन को विचारता रहा है। और एक-एक परमाणुवाद और अणु में प्रवेश करता रहा है। नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों में मानो बेटा! अपने में गतिवान् बनाता रहा है और ये विचारता

रहा है कि मैं उस परमपिता परमात्मा के अनन्तमयी जगत को जानता रहूँ। और मैं अपने में आनन्द को अनुभव करना चाहता हूँ। क्योंकि परमात्मा के अनन्तमयी ब्रह्माण्ड को जाने बिना और उसमें अपना समावेश किए बिना मानव को आनन्द की प्रतीति नहीं हुआ करती।

मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में ये वर्णन करते हुए कहा था कि हमारे यहाँ वास्तव में ये जो ब्रह्माण्ड है ये बड़ा अनन्तमयी है। परन्तु ऋषि-मुनियों की एक बड़ी विचित्र एक देन रही है क्या उन्होंने इस ब्रह्माण्ड को पिण्ड से मानो उसका समन्वय किया। पिण्ड को ब्रह्माण्ड से समन्वय और ब्रह्माण्ड को पिण्ड से समन्वय किया। और उसे जानने के लिए मानो सदैव तत्पर रहे। और व्यष्टि से समष्टि में और समष्टि को मुनिवरो! देखो, वह व्यष्टि में दृष्टिपात करते रहे।

योग

आओ, मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें विशेषता में नहीं ले जाऊँगा। केवल अपना मन्तव्य प्रगट कर रहा हूँ। कुछ परिचय देने के लिए चले आए हैं। क्योंकि हमारे यहाँ नाना प्रकार की मालाओं का वर्णन आता रहा है। मेरे पुत्रो! नाना प्रकार की ये जो मालाएँ हैं और जिन मालाओं को धारण करता हुआ मानव अपने में हर्ष ध्वनि करता रहा है। मानो ये जो ब्रह्माण्ड है अथवा मानव समाज है या प्राणी मात्र को हम कल्पित करते रहते हैं। तो मुनिवरो! एक-दूसरे के लिए मानव अपने में कटिबद्ध हो रहा है। अपने में एक-दूसरे में पिरोया हुआ सा दृष्टिपात आता है। हमारे यहाँ योग को साधना में मानव प्रवेश होने लगता है तो बेटा! देखो, **योग कहते हैं मिलन को।** हम किसी से अपना मिलन चाहते हैं और बिना मिले मुनिवरो! देखो, मानव को एक-दूसरे की जानकारी नहीं होती। और जब एक-दूसरा मानो देखो, मिलन में परणित हो जाता है, उनका, दोनों का समावेश हो जाता है तो वही समावेशता मुनिवरो! देखो, मानव को मानवीय क्षेत्र में प्रवेश कर देती है। और वही माला बन करके बेटा! देखो पिण्ड और ब्रह्माण्ड को

मापने लगते हैं। तो आओ, मुनिवरो! देखो आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा नहीं प्रगट करने जा रहा हूँ।

ब्रह्माण्ड की नाभि

मुझे स्मरण आता रहता है—आज के हमारे वैदिक पठन-पाठन में जहाँ नाना प्रकार की वार्त्ताएँ, वहाँ एक याग का प्रकरण भी आया। मैंने तुम्हें कई काल में ये वर्णन करते हुए कहा कि ऋषि-मुनियों ने इस याग के सम्बन्ध में बहुत-सा चिन्तन किया और मनन किया है और इस मानो देखो, याग को ब्रह्माण्ड की नाभि के रूप में वर्णन किया गया है। क्योंकि ये नाभि है और जैसे मानव के शरीर में एक नाभि है इसी प्रकार मानो देखो, इस पृथ्वी की नाभि भी याग कही गयी है। और मुनिवरो! जैसे माता के शरीर में नाभि है और नाभि से ही शिशु नाना प्रकार के रसों का स्वादन कर रहा है और वह अपने में ग्रहण कर रहा है। इसी प्रकार ये जो यज्ञशाला है ये अग्नि का मुख है और अग्नि के मुखारबिन्दु में हम जो साकल्य प्रदान करते हैं अथवा चरू प्रदान करते हैं तो मुनिवरो! देखो वह अग्नि का मुख ही मुनिवरो! देखो, देवताओं की, इस ब्रह्माण्ड की नाभि कहलाता है। ये तेजोमयी कहलाता है।

आओ, बेटा! आज मैं तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ। बेटा! एक समय कुछ जिज्ञासुजन महर्षि शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ पहुँचे। और महर्षि शिकामकेतु उद्दालक और उनकी पत्नी मानो देखो याग सम्पन्न करने के पश्चात् कुछ विचार-विनिमय कर रहे थे। क्योंकि जिज्ञासु उनके समीप पहुँचे थे। जिज्ञासुओं ने कहा, क्या हे प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं कि **''अमृतम् ब्रह्म क्रतम्''** मानो देखो, अमृत क्या है संसार में। और पृथ्वी की नाभि क्या है और ब्रह्माण्ड का सूत्र क्या है। तो ये तीन प्रश्न मुनिवरो! देखो जिज्ञासुओं ने किए। मेरे पुत्रो! मुझे स्मरण आता रहा है क्या महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने इसका उत्तर देते हुए कहा, क्या ये जो मानो देखो, ब्रह्माण्ड है, ये जो पृथ्वी की नाभि है ये याग है। मानो यज्ञशाला ही पृथ्वी की नाभि है। और उन्होंने द्वितीय रूप में कहा **''सम्भवे ब्रह्मणम्**

ब्रह्मा क्रतम् देवाः'' मानो देखो, यह ''अग्रताम् दिव्यम् ब्रव्हाः'' ब्रह्माण्ड की जो भी नाभि है वो भी याग है। परन्तु देखो, ये जो ब्रह्माण्ड का सूत्र है। ये **प्रणव** कहा गया है। मानो यही ब्रह्माण्ड को अपने में धारण किए रहता है। जैसे माला है, माला में भिन्न-भिन्न प्रकार के मनके हैं। परन्तु देखो, वह जो भिन्न-भिन्न मनके हैं वो ''सूत्रम् ब्रह्मा'' वे इस सूत्र में पिरोने से माला बन जाती है। जैसे मुनिवरो! देखो, आचार्यकुल में जब ब्रह्मचारी अध्ययन करता है तो अध्ययन करता हुआ मानो देखो गुरु और शिष्य के मध्य में जो एक सूत्र बना हुआ है। मेरे प्यारे! देखो, उनके ज्ञान रूपी जो शब्द हैं और शब्दों की मुनिवरो! देखो, माला बन जाती है वो सूत्र में पिरोयी हुई रहती है।

मेरे पुत्रो! देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने कहा, क्या ये मानो देखो, हमारे विचार में ये आता है, क्या देखो ये जो नाभि का प्रसङ्ग है, ये बड़ा विचित्र है। माता की नाभि है। परन्तु देखो माता के गर्भस्थल में शिशु पनप रहा है। परन्तु देखो, नाभि के द्वारा ही रसों का आदान-प्रदान हो रहा है और वही रसों को नदियों के द्वारा पान करता हुआ अपने में ग्रहण कर रहा है। तो मानो देखो, ये नाभि है और यज्ञम् भविताम्, वो भी यज्ञशाला के रूप में परणित रहती है। मेरे पुत्रो! देखो, जब पृथ्वी का चयन आता है उस समय परमपिता परमात्मा ब्रह्मा है, आत्मा यजमान है। और ये पञ्च महाभूत, मानो कोई इनमें होता है, कोई उद्गाता है, कोई अध्वर्यु बन करके बेटा! वो याग प्रारम्भ हो रहा है। तो विचार आता रहता है **''यागाम् भवितम् ब्रह्माः वर्णम् ब्रह्मेः क्रतम् देवाः''** मेरे पुत्रो! देखो वही तो अपने में अपनेपन को विचार रहा है और नाभि नाभ्याम् क्या वो यज्ञशाला के रूप में याग हो रहा है। और तो मुनिवरो! देखो, ब्रह्माण्ड की नाभि बन करके उसको गति दे रहा है।

अग्नि के स्वरूप

आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार ये चल रहा है, क्या मुनिवरो! देखो, शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ ब्रह्मचारी ने, जिज्ञासुओं ने ये प्रश्न किया और वह अपने में मौन हो

गए। परन्तु देखो, ऋषि कहता है, क्या ये जो हमारा शब्द है, यही तो शब्द मानो द्यौ में प्रवेश होता है। और द्यौ में जब प्रवेश होता है वो भी अग्नि के माध्यम से। क्योंकि अग्नि देवताओं का मुख है और वो देवताओं की मानो देखो दिव्यता कहलाती है। अग्नि ही मानो देखो, विभक्त करने वाली है, विभाजन करने वाली है। बेटा! देखो, मैंने कई काल में ये कहा है, क्या यही अग्नि है, जो मुनिवरो! देखो, आज भी हमारे पठन-पाठन में अग्नि का वर्णन आ रहा था और अग्नि ये कहती है **"सम्भव ब्रह्मेः अग्नम् ब्रव्हे क्रतम्"** मेरे पुत्रो! देखो ये जो अग्नि है, ये जब ब्रह्माग्नि बन करके रहती है। कहीं मानो देखो ये वैश्वानर अग्नि बन करके रहती है, कहीं मुनिवरो! देखो ये गार्हपत्य नाम की अग्नि बनकर के रहती है। मानो देखो अग्नि भिन्न प्रकार की अग्नियाँ हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में स्वीकार की हैं। परन्तु जब अग्नियों का चयन आने लगता है तो यही अग्नि मेरे प्यारे! देखो, काष्ठ में रहती है। ये जो यज्ञशाला में प्रवेश हो जाती है और वह प्रदीप्त हो करके, द्यौ में प्रवेश कर जाती है। मानो वही अग्नि है जो "अग्नम् ब्रह्मणाः लोकाम् अग्निः" मेरे प्यारे! देखो, वही अग्नि आयुर्वेदाचार्यों के गृह में प्रवेश होती रहती है। जब आचार्य उसका अध्ययन करता है तो बेटा! अपनी-अपनी वाणी को अग्नि के माध्यम से वो सजातीय बना लेता है। ज्ञानरूपी अग्नि जागरूक हो जाती है। वही अग्नि बेटा! जब आयुर्वेदाचार्यों के गृह में प्रवेश होती है तो ये बेटा! देखो, अग्नि प्रदीप्त हो करके मानव को वृत्तियों में रत्त करा देती है। वही अग्नि बेटा! जब देखो वैज्ञानिकों के गृह में प्रवेश होती है तो वही वैज्ञानिक बेटा! देखो, अरबों-खरबों प्रकार की अग्नि का चयन करने लगते हैं। जब बेटा! और गम्भीर योगियों के मध्य में ये अग्नि प्रवेश होने लगती है तो बेटा! देखो वह योगेश्वर अपनी उस अग्नि को मुनिवरो! कहाँ दृष्टिपात करता है–एक-एक श्वास में गमन करता है। अग्नि के श्वास को बेटा! देखो ब्रह्मसूत्र में प्रवेश कराता हुआ जब इसका चयन करता है तो मेरे प्यारे! देखो, यही अग्नि है जो मुनिवरो! देखो, अमृतम् जो एक श्वास के साथ में चित्रों का दर्शन करने लगता है। मेरे पुत्रो! ये अग्नि बड़ी विचित्र

बन करके रहती है। इसीलिए आज मैं बेटा! देखो, अग्नि के सम्बन्ध में कोई विचार देने के लिए नहीं, केवल एक परिचय देने के लिए आया हूँ और वह परिचय यह कि अग्नि को ही विचारना चाहिए। ये अग्नि बेटा! देखो, यज्ञशाला में प्रदीप्त रहती है। ब्रह्म और आचार्य के शब्दों को ले करके द्यौ में प्रवेश करा देती है। और वह स्वाहा रूपी जो मानो देखो, एक नृत हो रहा है उसके ऊपर मुनिवरो! देखो, वह ''अग्नम् ब्रह्मः'' अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो जाती है।

महर्षि शिकामकेतु उद्दालक का एक पक्षीय विज्ञान

मेरे प्यारे! आओ, मैं आज तुम्हें—महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने कहा, आओ विराजों और मेरे यहाँ याग होता रहता है और याग के माध्यम से चित्रों का दर्शन होता रहता है। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारीगण जब यज्ञ करने के लिए तत्पर हो गए। मुनिवरो! देखो, जैसे याग प्रारम्भ हुआ तो याग के प्रारम्भ होते ही मुनिवरो! देखो वह जैसे स्वाहा उच्चारण कर रहे थे। उनके बेटा! वही शब्द द्यौ में प्रवेश हो रहे थे और द्यौ में मुनिवरो! देखो, प्रवेश होते हैं। उन्होंने कहा, हे द्विजो! ये देखो यन्त्र है, यन्त्र में देखो, तुम्हें ये दृष्टिपात आ रहा है। मेरे प्यारे! जिज्ञासु बड़े प्रसन्न हुए और जिज्ञासुओं ने कहा, प्रभु! आपको धन्य है आपने तो गागर में सागर की कल्पना की है। मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ क्योंकि जहाँ वो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता थे वहाँ भौतिक विज्ञान उनको मानो देखो वहाँ महानता में सदैव परणित रहता था। तो विचार आता रहता है बेटा! आज इस सम्बन्ध में एक केवल यही विचार देने के लिए कि शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ नाना प्रकार का विज्ञान अपने में नृत करता रहा है और विज्ञान की संसार में कोई सीमा नहीं है। क्योंकि देखो, हमारे यहाँ ऋषि ने एक बड़ा विचित्रत्त्व उन्हें दृष्टिपात कराया। क्योंकि हमारा एक पक्षीय विज्ञान भी रहता है और सामूहिक विज्ञान भी रहता है और व्यापिक विज्ञान के ऊपर भी मानव देखो, अपना विश्लेषण करता रहा है। मेरे प्यारे! उद्दालक गोत्रीय शिकामकेतु उद्दालक ने अपने मन में यही जाना क्या मैं याग के माध्यम

से मानो अपने चित्रों का दर्शन करना चाहता हूँ। ये एक पक्षीय विज्ञान है। हमारे यहाँ एक पक्षीय विज्ञान, क्या पिता, महापिता, पड़पिता और मुनिवरो! देखो वह पिताओं की एक मानो देखो, माला बना लेते थे और उस माला को मुनिवरो! देखो, यन्त्रों में दृष्टिपात करते रहे। मेरे पुत्रो! देखो एक विज्ञान वह है जो विज्ञान मेरे पुत्रो! देखो, व्यापिक रूप में कोई भी मानव का दर्शन हो सकता है चित्रों में। परन्तु एक पक्षीय विज्ञान की यन्त्रशालाओं में अपने पिता, महापिता, पड़पिताओं के चित्र उसमें दृष्टिपात करते रहे। मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें विज्ञान के युग में ले जाना नहीं चाहता हूँ। जब एक वाक्य आ रहा है तो मानो देखो, उसकी उद्गीतता गाना हमारा ये कर्त्तव्य है। मेरे पुत्रो! देखो, पिता, महापिताओं के चित्रों का वो दर्शन करते रहते थे और दर्शन मुनिवरो! देखो एक पक्षीय विज्ञान कहलाता है।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण है भारद्वाज मुनि के यहाँ एक यन्त्र का निर्माण ऐसा हुआ, क्या जहाँ रक्त के बिन्दु से ही मानो देखो, चित्रों का दर्शन होता रहता था। मेरे पुत्रो! देखो, वो विज्ञान अपनी आभा में बड़ा नृत करता रहा। परन्तु इससे **ऊर्ध्वा में विज्ञान, शिकामकेतु उद्दालक का था।** जो मेरे प्यारे! अपने पिता, महापिता, पड़पिता बेटा! सौवें महापिता तक के मानो देखो, शब्दों के साथ में चित्र हैं और शब्द हैं। शब्दों की माला बनी तो उसके पश्चात् चित्रों की माला बन करके दृष्टिपात करने लगे। उसके पश्चात् उसके क्रियाकलाप जो भी पूर्वज उनके क्रियाकलाप करते थे व मानो देखो, पूर्वजों का भी प्रायः वो दर्शन करते रहते थे। तो मेरे प्यारे! विज्ञान कितनी आभा में नृत करता रहा है। आज मैं विज्ञान के युग में तुम्हें ले जाना नहीं, केवल तुम्हें परिचय कराने के लिए आया हूँ कि विज्ञान कितना महान् है। और याग के माध्यम से इस विज्ञान को कितना जानने का उन्होंने प्रयास किया।

माता रम्भेश्वरी देवी का पुत्रेष्टि याग

आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेषता में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ। विचार केवल ये कि हमारे यहाँ अपने में अपनेपन को ही विचारने वाले ऋषि-मुनि

मेरे प्यारे! एक-एक अङ्कुर में ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का दर्शन करते रहे हैं। तो आओ, मुनिवरो! देखो, हमारा वेद मन्त्र हमें क्या कह रहा है। वेद मन्त्र किस मार्ग पर ले जा रहा है। मेरे प्यारे! देखो शब्दों की ध्वनि को श्रवण करने वाली मेरी पुत्रियाँ, माता भी इस प्रकार के विज्ञान में सदैव हुत करती रही हैं। क्योंकि महर्षि शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ एक **रोहिणीचित्त** नाम का ब्रह्मचारी था। जो मानो देखो, माता रम्भेश्वरी से उसका जन्म हुआ था जो शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ। मेरे प्यारे! देखो, माता ने एक समय जब वो अपने ग्रहों में गमन कर रहा था और वह उस समय, एक समय शिकामकेतु उद्दालक से बोली हे प्रभु! मेरे गर्भ में एक शिशु पनप रहा है। एक मानो पुत्रेष्टि याग हो रहा है। मैं भगवन्! इस याग को कैसे सम्पन्न करूँ। तो उस समय देखो, ऋषि शिकामकेतु उद्दालक मानो वेद के मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे। और ये कहा कि हे देवी! तुम वेद मन्त्रों का उद्गीत गाओ। यदि तुम्हारी इच्छा ये है कि मेरे गर्भस्थल से एक महान् से महान् पुत्र का जन्म हो और विद्वान और साधक का जन्म हो तो तुम्हें वेद के मन्त्रों का उद्गीत गाने में सदैव तत्पर रहना होगा।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। रम्भेश्वरी बेटा! प्रातःकालीन वेद मन्त्रों का अध्ययन करती रहतीं और उसकी विवेचना करती रहतीं। मेरे प्यारे! देखो, जब रात्रि के अन्तिम चरण में वे समाधिष्ठ हो जातीं और समाधिष्ठ हो करके मेरे पुत्रो! अपने अन्तरात्मा, अन्तर्हृदय में जो मानो देखो, गर्भस्थल में जो शिशु पनप रहा है उस शिशु से वो प्रगट करती रहतीं। एक समय बेटा! प्रातःकालीन रात्रि के अन्तिम चरण में अपनी आत्मा से चर्चा कर रही थीं और वो ये कह रही थीं, हे बाल्य! हे आत्मा! तू मेरे गर्भस्थल में विद्यमान है परन्तु मैं ब्रह्मणेः वृत्तम देवाः। मेरे प्यारे! देखो, वह माता अपने में तप कर रही है और तप करती कहती ''आत्माम् ब्रह्मेः ज्ञानम् ब्रव्हे क्रतम्'' हे आत्मा, तुझे ब्रह्मज्ञान में परणित होना है, ब्रह्मज्ञानी बनना है। मेरे प्यारे! देखो, माता के ये उद्गार हृदय में समाहित हो रहे हैं। मानो देखो, गर्भस्थल में वो अपने संस्कारों को उद्बुद्ध

कर रही है और संस्कारों को मुनिवरो! देखो, बाल्य के अन्तःकरण में प्रवेश करा रही है। मेरे प्यारे! माता अपने में तपस्वी है। मेरे पुत्रो! देखो, उस माता के गर्भ से जब बाल्य का जन्म हुआ तो मेरे प्यारे! देखो, माता ''अस्सुतम् ब्रह्मेः''। मेरे प्यारे! देखो, उसे वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए कहा, बाल्य तुम ''तपोहम् ब्रव्हाः''। मेरे प्यारे! देखो, माता रम्भेश्वरी ने ये कहा, क्या हे बाल्य तुम्हें इस संसार में आ करके तप करना है और ''ग्रर्भम् ब्रव्हे क्रतम देवाः'' तुझे मेरे गर्भाशय को ऊर्ध्वा में गमन कराना है। मानो देखो जिस माता के गर्भस्थल में महान् पुत्रों के जन्म होते हैं, तपस्वी पुत्रों के जन्म होते हैं उस माता का गर्भाशय पवित्र बन जाता है। मेरे प्यारे! जिस माता के गर्भस्थल से मानो देखो, दूस्वहे और दूर विचार वाले पुत्रों या पुत्रियों का जन्म होता है उस माता का गर्भाशय दूषित हो जाता है। मेरे प्यारे! माता रम्भेश्वरी अपने बाल्य को यही कहा करती थी हे बाल्य! तुझे बह्मवेत्ता बनना है। क्योंकि ये संसार तो निस्सारता में गमन करता रहता है। जैसे बेटा! माता मदालसा ने कहा था। उसी प्रकार मुनिवरो! देखो, माता का ये उद्गार हृदय में समाहित हो रहा था। बाल्य के अन्तःकरण में प्रवेश हो रहा था। तो मुनिवरो! देखो विचार आता रहता है। मैं अपने विचारों को दूर न ले जाऊँ। विज्ञानवेत्ता बनाने के लिए ही मानो देखो माता की प्रबल तपोमयी, तपो में ही निष्ठा रही है। जिस निष्ठा को विचारने के पश्चात् मानव अपनी आभा में गमन करता रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं इस सम्बन्ध में विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। विचार क्या, मुनिवरो! देखो, माता रम्भेश्वरी के गर्भ से जब बाल्य का जन्म जब बाह्य जगत में आया तो माता लोरियों का पान करा रही है और याग कर रही है। और जिस वेद मन्त्र–जिस देवता का वेद मन्त्र है उसी देवता की उपासना कर रही है। मेरे प्यारे! वह संस्कारों को उद्बुद्ध कर रही है और वे संस्कार भरण कर रही है बाल्य को।

मेरे प्यारे! देखो, जब वो बाल्य कुछ प्रबद्ध हुआ तो एक समय याग कर रहे थे। मुनिवरो! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक ने कहा, देवी

तुम्हारा बाल्य कैसा है। उन्होंने कहा, प्रभु! आप अपने में धारण कीजिए। क्योंकि मेरा दायित्व समाप्त हो गया है भगवन्! मेरे पुत्रो! देखो, उन्होंने अपने में धारण किया। और उन्होंने कहा कि जाओ तुम आचार्यकुल में प्रवेश करो। मेरे पुत्रो! रम्भेश्वरी ने ये कहा कि प्रभु! जब आप इतने विज्ञानवेत्ता हैं, आपके यहाँ नाना प्रकार की उड़ाने उड़ी जाती हैं विज्ञान के सम्बन्ध में तो इसको शिक्षा देने वाला मानो कैसा आचार्य तुम चाहते हो। उन्होंने कहा, हे दिव्यम्! आप ये नहीं जानती कि पिता मानो देखो आचार्य का, आचार्यपद को नहीं अपना सकता। क्योंकि आचार्य तो और होता है और ये पितर और होता है। मेरे पुत्रो! देखो जब माता से ये कहा तो ऋषि ने, इन वाक्यों को स्वीकार किया।

बाल्य रोहिणीदत्ता का अध्ययन काल और बहत्तर लोकों का भ्रमण

महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के द्वारा बेटा! अध्ययन करने के लिए तत्पर हो गए। उन्होंने बेटा! परमाणु विद्या को और उन्होंने मुनिवरो! देखो, ब्रह्म विद्या को दोनों को अपनाने के लिए तत्पर हो गए। क्योंकि वह अपने में ये विचारता रहता था क्या माता ने मुझे ये कहा है कि तुझे मानो देखो, विज्ञानवेत्ता बनना है। और आध्यात्मिकवेत्ता बनना है। मेरे प्यारे! देखो, वह महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के द्वारा अध्ययन करते रहते थे। अध्ययन करते-करते मुनिवरो! देखो, एक समय जब वह बाल्य अध्ययन कर रहा था तो विज्ञान में भी उतना ही पारायण था। एक समय बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के यहाँ परमाणु विद्या के ऊपर बड़ा अध्ययन होता था। मेरे प्यारे! देखो, एक ब्रह्मचारी से कहा, तुम अन्तरिक्ष की यात्रा करो। अपने यन्त्रों में विद्यमान हो जाओ।

मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के द्वारा बेटा! जब यन्त्रों का निर्माण हुआ और वैज्ञानिक यन्त्रों में विद्यमान हो करके मेरे पुत्रो! देखो ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारी रोहिणीदत्ता, मेरे प्यारे! देखो, यान में विद्यमान हो गया। और यान में विद्यमान हो करके यान उड़ान उड़ने

लगा। जब यान उड़ने लगा तो बेटा! पृथ्वी मण्डल से, महर्षि तत्त्वमुनि महाराज के आश्रम से वो यान उड़ान उड़ता है। सबसे प्रथम वो मङ्गल में पहुँचा और मङ्गल में जाने के पश्चात् कुछ समय वहाँ वास किया। और मङ्गल से उड़ान उड़ी तो बेटा! वो शुक्र में चला गया और शुक्र से उड़ान उड़ी तो बुद्ध में चला गया। और बुद्ध से उड़ान उड़ता ही मुनिवरो! देखो, वो मङ्गल में चला गया। और मङ्गल को दृष्टिपात करके बेटा! वहाँ से उन्होंने उड़ान उड़ी तो वो मृचिका मण्डल में चला गया। और मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो वो कृति मण्डल में प्रवेश हो गया और कृति मण्डल से जब उड़ान उड़ी तो वह बेटा! देखो क्रेतकेतु मण्डल में प्रवेश कर गया। और क्रेतकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो वसिष्ठ मण्डल में चला गया और वसिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! वो अरुन्धती मण्डल में चला गया। अरुन्धती में बेटा! छः माह तक उसने वास किया, वैज्ञानिक ने। और वहाँ से उड़ान उड़ी तो बेटा! देखो वह मौम वृचिका मण्डल में प्रवेश हो गया और मौम वृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! विश्वेकेतु मण्डल में प्रवेश हो गया। और विश्वेकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो मानो वहाँ वाहनकेतु मण्डल में प्रवेश हो गया। और वाहनकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! देखो वह कृतिका मण्डल में प्रवेश हो गया और कृतिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो बेटा! वो रमेति मण्डल में प्रवेश कर गया। और रमेति मण्डल में जब प्रवेश किया तो बेटा! वहाँ उन्होंने छः माह तक पुनः वास किया। और वहाँ से भी उड़ान उड़ते हुए, मेरे प्यारे! वहाँ से उड़ान उड़ी तो वह वासन मण्डल में प्रवेश हो गए। और वासन मण्डल से उड़ान उड़ते हुए मुनिवरो! देखो वह कन्धुनि मण्डल में प्रवेश कर गए। और कन्धुनि मण्डल से उड़ान उड़ते हुए बेटा! वह मानो मूल नक्षत्र में अपने को वास किया। और मूल नक्षत्र में बेटा! एक माह तक वो रहे। परन्तु देखो, वहाँ से उड़ान उड़ते हुए वो नरवेतु मण्डल में प्रवेश कर गए। बेटा! देखो, मैं विशेषता में नहीं जाऊँगा। वह बहत्तर मण्डलों का भ्रमण करने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, वह पुनः मानो देखो, बहत्तर लोकों में भ्रमण करते हुए वह मुनिवरो! देखो ऋषि के आश्रम

में प्रवेश हो गए। तो विचार आता रहता है बेटा! आज मैं तुम्हें विज्ञान के युग में ले ही गया हूँ।

ऋषि रोहिणीदत्ता की आध्यात्मिक उड़ान

विचार तो मैं ये तुम्हें प्रगट कर रहा था क्या मुनिवरो! देखो वह ब्रह्मज्ञानी जब अध्ययन कर रहा था तो उस समय तत्त्वमुनि महाराज ने कहा, हे बाल्य! तुम मानो देखो, लोकों का अध्ययन करने के पश्चात् तुम्हारा आश्रम में वास हो गया है। मेरा अन्तरात्मा बहुत प्रसन्न है। मानो तुम अपने में महान् हो। मेरे प्यारे! देखो, विज्ञान में रत्त होने वाले हो। मुनिवरो! देखो एक समय महर्षि तत्त्वमुनि महाराज ने उसके समीप मध्य रात्रि में बेटा! एक वार्त्ता प्रगट करने लगे। और ये कहा कि ''मौनकेतु मण्डलम् ब्रहे'' हे ब्रह्मचारी! मैं ये जानना चाहता हूँ कि जैसे तुम भौतिक विज्ञान में इतनी उड़ान उड़ रहे हो और लोकों को ले गए हो। मैं ये जानना चाहता हूँ कि तुम आध्यात्मिकवाद में कितने पारायण हो। उन्होंने कहा, हे प्रभु! आध्यात्मिकवाद में तो मैं उतना ही हूँ जितना आपने मुझे शिक्षा दी है। क्योंकि आचार्य ही तो शिक्षा देने वाला है। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, तो तुम मुझे वर्णन कराओ कि मैंने कई समय तुम्हें आध्यात्मिकवाद की भी चर्चाएँ की हैं। उन्होंने कहा, हे प्रभु! मैं आध्यात्मिकवाद में समन्वय करता रहता हूँ। आध्यात्मिक का अभिप्राय ये है क्या ये जो ब्रह्माण्ड को मैं मापता रहता हूँ और ब्रह्माण्ड को मापते-मापते मानो देखो इस विज्ञान की अनुपम धारा में प्रवेश कर जाता हूँ। तो आध्यात्मिकवाद में तो मेरा विचार ये है कि **मिलन का नाम ही आध्यात्मिकवाद है।** क्योंकि मिलन होना है दो वस्तुओं का, जब विच्छेद हो जाता है, उनके मिलन होना ही उसका नाम एक याग कहा जाता है। और वही एक साधना से समन्वय रहने वाली एक कृतिका कहलाती है। उन्होंने कहा, निर्णय दो। उन्होंने कहा, निर्णय ये है कि मैं ये जो मन है मैं मन को देखो कहीं उसे समावेश करना चाहता हूँ। परन्तु मन में भी कोई वस्तु समावेश करना चाहता हूँ। तो ऋषि ने कहा है क्या देखो जब ये इन्द्रियाँ–पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। जब मैं इन्द्रियों के

देखो लौकिक विषय को मैं देखो अमृतम् ज्ञानेन्द्रियों में समाहित कर देता हूँ। और ज्ञानेन्द्रियों में समाहित कर देता हूँ और ज्ञानेन्द्रियों का जो विषय है, उसे मन में जब समाहित हो जाता है और ये मन प्राण में समाहित हो जाता है तो मानो तरङ्गों का उद्बुद्ध, तरङ्गें उद्बुद्ध होने लगती हैं और उन तरङ्गों को जब मैं जानने लगता हूँ तो आध्यात्मिक विज्ञान उसे मैं मानो परमात्मा के राष्ट्र में अपने को स्वीकार कर लेता हूँ।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा है, क्या मैं, उस ब्रह्मचारी ने कहा, मैं अपने को ही ब्रह्म में दृष्टिपात करता हुआ मानो देखो मैं विचारता रहता हूँ, क्या परमात्मा का राष्ट्र ही ऐसा राष्ट्र है, अरे! जहाँ अन्धकार भी नहीं है और जहाँ अन्धकार नहीं है वहाँ मानो आलस्य और प्रमाद नहीं है। और जहाँ देखो आलस्य प्रमाद नहीं है वहाँ रात्रि नहीं है, सदैव प्रकाश रहता है तो मृत्यु क्यों आने लगी है। क्योंकि संसार में प्रत्येक मानव मृत्यु से पार होना चाहता है। और मृत्यु से उपराम होना चाहता है। प्रत्येक मानव की ये जिज्ञासा लगी रहती है। मेरी प्यारी! माता ये चाहती है कि मेरी मृत्यु न हो, मेरे पुत्र की भी मृत्यु न हो। मानो मेरा सर्वत्र इसी प्रकार बना रहे। परन्तु विचार आता है कि "मृत्यम् ब्रह्मेः" अरे! मृत्यु उसे विचारने से प्रतीत होती रहती है कि प्रभु के राष्ट्र में न तो आलस्य है, न प्रमाद है और न ही रात्रि है। जहाँ रात्रि, प्रमाद और आलस्य नहीं है अरे! वहाँ सदैव प्रकाश रहता है और **प्रकाश का नाम ही जीवन है।** और अन्धकार का नाम मृत्यु कही गयी है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार, ब्रह्मचारी ने ऋषि को ये वर्णन कराया तो ऋषि आश्चर्य में बोले कि हे ब्रह्मचारी! ये संस्कार तुम्हें कहाँ से उद्बुद्ध हुए हैं। उन्होंने कहा, ये संस्कार आचार्य, आपके ही चरणों में मुझे उद्बुद्ध हुए हैं। उन्होंने कहा कि मैं तो केवल एक अङ्कुरों को जागरूक ही तो करने वाला हूँ। परन्तु अङ्कुरों का वृक्ष कैसे बनता है, उसे मुझे वर्णन कराया।

महान् विश्वविद्यालय

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारी ने कहा, हे प्रभु! वह जो अङ्कुरों का वृक्ष

बनता है, ये वृक्ष बनता है मानव के जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार जब उद्‌बुद्ध हो जाते हैं। मानो देखो उसमें माता कारक होती है, पिता कारक होता है। मानो देखो, कितना महान् से महान् विश्वविद्यालय हो अथवा कितना ही शिक्षालय हो, जब तक माता के संस्कार मानव के अन्तःकरण में, बाल्य के अन्तःकरण में महान् और पवित्र नहीं होंगे, तब तक मानो देखो, विश्वविद्यालय में विद्या अध्ययन करते रहो उससे वो संस्कार नहीं बन पाएँगे। जब माता के गर्भस्थल में मेरे संस्कारों की उद्‌बुद्धता हो गयी है। मेरे प्यारे! देखो, ये वाक्य ब्रह्मचारी के श्रवण करता हुआ, ऋषि ने कहा, धन्य है ब्रह्मचारी! वास्तव में प्रायः ऐसा ही दृष्टिपात आता है।

मेरे प्यारे! देखो, आज मैं अपने विचारों को दूरी नहीं ले जा रहा हूँ। विचार केवल ये, क्या मुनिवरो! देखो, मैं शिकामकेतु मुनि की चर्चा कर रहा था। शिकामकेतु मुनि की चर्चा, मानो देखो उनके पुत्र की चर्चा कर रहा था। माता ने जो संस्कार दिए, उनकी विवेचना हो रही थी। तो मेरे पुत्रो! देखो, वह तत्त्वमुनि महाराज के यहाँ जो अध्ययन करने वाला ब्रह्मचारी, लोक-लोकान्तरों की यात्रा कर रहा है, वो यात्री बना हुआ है। मुनिवरो! देखो ये सब मानो विज्ञान की एक उपलब्धि है। भौतिक विज्ञान की उपलब्धि है। आध्यात्मिकवाद की मानो देखो महानता उसमें निहित रहती है।

आओ, मेरे प्यारे! मैं अपने विचारों को देता हुआ दूरी न चला जाऊँ। विचार केवल ये प्रारम्भ हो रहा है। माता जिस बाल्य को महान् बना देती है, अपने संस्कार, संस्कार प्रदान कर देती है मेरे प्यारे! वो संस्कार, देखो विश्वविद्यालयों में प्राप्त नहीं होते। वह संस्कार तो माता के ही गर्भस्थल में वो जो महान् से महान् विश्वविद्यालय है जहाँ निर्माण होता है, जहाँ प्रभु और माता के विचार दोनों मिलन हो करके निर्माण की एक धारा को जन्म दे देते हैं। मेरे प्यारे! देखो, प्रभु निर्माण करने वाला है। माता विचार देने वाली है और संस्कारों को उद्‌बुद्ध करने वाली है। चित्त के मण्डल का बेटा! देखो, निर्माण हो जाता है। वही चित्त के मण्डल में बेटा! जो संस्कार उद्‌बुद्ध हैं अरे! वही तो जागरुक हो करके मानव एक माला को अपने में धारण करने

लगता है। मेरे पुत्रो! ये विचित्र माला है जिस माला को धारण करने के पश्चात् मानव का जीवन एक पवित्रता को धारण करने लगता है।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ। और वह परिचय क्या है मेरे पुत्रो! देखो, शिकामकेतु उद्दालक मुनि का विद्यालय, शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ, जहाँ याग हो रहा है। और याग के परमाणुओं का अन्वेषण करता हुआ, मेरे प्यारे! देखो, अग्नि की धाराओं पर शब्द विद्यमान हो करके शब्द के साथ में चित्र है। और चित्र के साथ में मुनिवरो! देखो, उनके क्रियाकलाप हैं जो द्यौ में प्रवेश हो गए। वे द्यौ मण्डल में प्रवेश हो जाते हैं। तो मुनिवरो! देखो, द्यौ से ही वह जानता रहता है। मैं एक पक्षीय विज्ञान की चर्चा कर रहा था। मेरे प्यारे! देखो, शिकामकेतु उद्दालक ने पिता, महापिताओं के चित्रों का दर्शन किया और वो यन्त्रों के द्वारा किया। मुनिवरो! देखो चित्र और देखो उनके शब्द और उनके क्रियाकलाप वे सब उनकी विज्ञानशाला में दृष्टिपात आते थे।

भव्य यज्ञशाला

आओ, मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार क्या। परमात्मा का ये ऐसा अनूठा जगत है बेटा! मानो जितना भी ये जड़ और चेतन्य-जगत हमें दृष्टिपात आता है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में ही वो प्रभु दृष्टिपात आने लगता है। मेरे पुत्रो! देखो, आज का विचार क्या, हम परमपिता परमात्मा की महती और उनकी महानता के ऊपर सदैव मानो देखो उनके गुणों का गुणवाद करते रहें। और याग अपने में ऐसा विशिष्ट याग है जिसके जानने के पश्चात् मेरे प्यारे! देखो, संसार में प्रत्येक वस्तु से याग ही याग दृष्टिपात आते रहते हैं। एक समय बेटा! देखो जब महर्षि शिकामकेतु ब्रह्मचारी के रूप में थे तो उनसे ये प्रश्न किया एक समय, स्वाति मुनि ने क्या महाराज देखो, याग कितने प्रकार के होते हैं। तो उस समय शिकामकेतु उद्दालक मुनि ने कहा, बहुत प्रकार के होते हैं। मानो देखो, **ये संसार का जितना भी**

शब्द है, जितना भी क्रियाकलाप है उस सर्वत्र का नाम एक याग माना गया है। उन सबमें याग की प्रतिभा है। माता अपने पुत्रम् ब्रह्मेः माता कहती है–अपने देखो जब पति और पत्नी का समान वृत्त होता है तो वह कहती है हम याग करना चाहते हैं, वह पुत्रेष्टि याग करना चाहते हैं। जब मुनिवरो! देखो, कृषक अपने यहाँ वह देखो अपने में निष्क्रिय बन जाता है तो राजा कहता है देखो, यहाँ अमृत अग्निष्टोम याग किया जाए। अग्निष्टोम का अभिप्रायः ये है कि **''यागाम् भवितम् यागाम् रुद्रोभागम् ब्रह्माः लोकाम्''।** मानो देखो, याग करना चाहते हैं वह अग्निष्टोम याग में मुनिवरो! देखो वो याग करता है। वृष्टि के रूप में परणित हो जाता है। तो ये संसार बेटा! एक प्रकार की मानो भव्य यज्ञशाला है। जिस यज्ञशाला में विद्यमान हो करके प्रत्येक मानव अपने में याज्ञिक बना हुआ है। तो ये जितना भी संसार है, ये सर्वत्र एक यज्ञशाला के रूप में परणित रहता है। तो मुनिवरो! देखो, ये उद्गीत गाकर ऋषि अपने में मौन हो गए। और विचारने लगे कि अपने में ''यागम् भवितम् ब्रह्माः'' तो मुनिवरो! ये उच्चारण करते हुए ऋषि मौन हो गया।

आज का विचार हमारा ये कह रहा है हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। बेटा! ये आज का हमारा वाक्य अब सम्पन्न होने जा रहा है। कल समय मिलेगा, तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट कर सकूँगा। आज का वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

''ओ३म् देवाः आभ्याम् ऋषि वरुणः आपा रथम् ब्रह्माः''

महर्षि महानन्द मुनि जी–अच्छा भगवन्।
पूज्यपाद-गुरुदेव–आनन्दित रहो।

दिनाँक : 6 अप्रैल, 1990
स्थान : ग्राम भटौला, बुलन्दशहर
उत्तर प्रदेश

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. सृष्टि के आदि में ही यदि कोई गुरु हुआ तो ब्रह्मा हुआ।
2. ब्रह्मा उसे कहते हैं जो चारों वेदों का महान् प्रकाण्ड पण्डित हो।
3. ओ३म् के शस्त्र को ले करके अच्छाईयों को लाना बहुत अनिवार्य है।
4. संसार के विधान में सबसे पूर्व प्रकाश आता है, कम्पन्नता आती है और उसके पश्चात् अन्धकार आता है।
5. संसार में सूर्य के उत्पन्न होने से पूर्व प्रकाश आता है।
6. यह जो संस्कृत है, वेदवाणी है इसका सम्बन्ध प्रत्येक भाषाओं से रहता है।
7. जब मानव योगाभ्यास करता है तो अपने मानसिकता के ऊँचे शिखर पर पहुँच जाता है।
8. आत्मा ज्ञान का स्त्रोत है, ज्ञान का भण्डार है।
9. संसार में शान्ति लाने का यदि कोई मार्ग है तो वह केवल ओ३म् की पतिका है।
10. मानव का अंहिसा परमोधर्म ही धर्म है।
11. नारद मन को भी कहते हैं, नारद परमात्मा को भी कहते हैं, नारद नाम के ऋषि भी हुए हैं।
12. जिसका आत्मा लोक-लोकान्तरों में भ्रमण करने वाला हो उसको नारद नाम की उपाधि प्रदान की जाती है।
13. जो गाया जाता है उसे गायित्री कहते हैं।
14. जितना भी हृदय स्वच्छ और महान् होगा उतना उसका वाक्य तपा हुआ होगा।
15. ऋत् इसी को कहते हैं जिसमें ब्रह्म का वास रहता है, जिसमें ब्रह्म परणित रहता है।
16. जिस लोक में जो तत्त्व प्रधान होगा उसी तत्त्व वाले प्राणी भ्रमण करते हैं।
17. आज हम जिस चेतना से इन्द्रियों का भान करते हैं उसी चेतना का नाम ऋत् कहा जाता है।

॥ ओ३म् ॥

विनम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व जन्म के शृङ्गी ऋषि) की तपोस्थली लाक्षागृह बरनावा की पावन भूमि पर उनके द्वारा स्थापित आश्रम, गुरुकुल व गौशाला संचालित हो रहे हैं। आश्रम पर प्रति वर्ष रक्षा बन्धन, गुरुदेव के जन्मोत्सव पर सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवम् फाल्गुन मास में पाँच यज्ञशालाओं पर चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाता है तथा गुरुकुल में 100 के लगभग ब्रह्मचारी छठी से बारहवीं तक निःशुल्क शिक्षा ग्रहण करते हैं एवम् गौशाला में भी 40 के लगभग गौवंश हैं। इन कार्यों के लिए 6 अध्यापक व पाँच कर्मचारी भी संस्था की ओर से कार्यरत हैं। गुरुजी के समय से ही ये सब आयोजन आप सब दानियों के सात्त्विक दान से सम्पन्न हो रहे हैं। कोरोना महामारी मे लॉक डाउन के समय भी 2-3 अगस्त (रक्षा बन्धन) एवं 4-5 सितम्बर (गुरुदेव का जन्मदिन) को भी विधि-विधान से सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन हुआ है। लेकिन प्रशासन की अनुमति न मिलने के कारण श्रद्धालु, यज्ञ-प्रेमी, दानदाता उक्त यज्ञों में न तो भाग ले सके और न ही अपना सहयोग प्रदान कर सके। उक्त कारण वर्तमान समय में आश्रम संचालन में आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इस कारण आप सभी श्रद्धालु यज्ञ-प्रेमियों से विनम्र-निवेदन है कि अपनी श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार संस्था के निम्न खाता संख्या में अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

श्री गाँधी धाम समिति लाक्षागृह बरनावा (बागपत)

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया बरनावा (बागपत)

खाता संख्या : 11650180365 **IFC कोड :** SBIN0006602

—: निवेदक :—

यशोधर्मा सोलङ्की	**राजपाल त्यागी**	**ठा. वीर सिंह**
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
विनोद शास्त्री	**गुरुवचन शास्त्री**	**अरविन्द शास्त्री**
प्रधानाचार्य	सहायक अध्यापक	सहायक अध्यापक

एवम् समस्त गुरुकुल परिवार

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

सदस्यता

पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की ज्ञान गङ्गा का मासिक पत्रिका ''यौगिक प्रवचन'' में, वैदिक अनुसन्धान समिति द्वारा प्रकाशन किया जाता है और जिस के आजीवन सदस्य बनने के लिए शुल्क दिनाँक 1 जनवरी 2019 से 1500 रु. और वार्षिक सदस्य बनने के लिए शुल्क 150 रु. है जिसको आप समिति के पते के साथ-साथ निम्न किसी एक पते पर भी डाक द्वारा भेजकर सदस्य बन सकते हैं–

1. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, प्रकाशन मन्त्री
   डी-33, पञ्चशील एन्क्लेव, नई दिल्ली-110017, फोन : 011-41030481
2. सुश्री नीरू अबरोल, कोषाध्यक्ष
   K-3, लाजपत नगर,-III, नई दिल्ली-110024 फोन : 011-41721294
3. श्री जितेन्द्र चौधरी, प्रचार मन्त्री
   ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मोबाइल : 9811707343

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	150.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली–	
स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आओ, आज हम उच्चारण करते चले जाएँ, कि वह देव की जो अनुपम देन है, वह जो अनुपम प्रकाश है उसमें नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान आता है और नाना प्रकार की प्रतिभा उसमें हमें विराजमान होती प्रतीत होती है। आज हम उस महान् देव, वेदवाणी में ही, प्रभु की आनन्दमयी जो देन है उसका अनुवाद करते हुए, वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है हे महाप्रभु! अकृते! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाला है, जीवन को उदबुद्ध करने वाला है। तेरी ही महती, अनुपम कृपा से यह हमारा जीवन उदबुद्ध हो रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 49 : अंक : 578
मार्च 2021

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-03-2021
Published on 5th day of the same month